University Centre for Distance Learning

Syllabi & Scheme of Examination
MA Hindi (Previous)
2013-2014

Chaudhary Devi Lal University
Sirsa (Haryana)

Website: www.cdlu.ac.in

SCHEME OF EXAMINATION
MA HINDI (P)

(DISTANCE EDUCATION MODE)

Paper Code	Course Nomenclature	Maximum Marks	Minimum Marks	Assignment	Time
	(1) भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा	80	28	20	3 Hrs.
	(2) हिंदी साहित्य का इतिहास	80	28	20	3 Hrs.
	(3) आधुनिक गध-साहित्य	80	28	20	3 Hrs.
	(4) आधुनिक हिन्दी काव्य	80	28	20	3 Hrs.
	(5) वैकल्पिक पेपर: भारतेन्दु हरीश चंद्र जय शंकर प्रसाद सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' प्रेमचंद पत्रकारिता- प्रशिक्षण अनुवाद-विज्ञान हरियाणवी भाषा और साहित्य	80	28	20	3 Hrs.

UNIVERSITY CENTRE FOR DISTANCE LEARNING
CHAUDHARY DEVI LAL UNIVERSITY, SIRSA

Syllabus and Courses of reading for
MA Hindi (Previous)
Session 2013-2014

एम॰ ए॰, हिन्दी (पूर्वार्द्ध)
(सत्र 2002-2003 से प्रभावी)

प्रश्न पत्र-1 भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा

पूर्णांक : 100
समय : 3 घण्टे

निर्देशः 1. पाठ्यक्रम चार खण्डों में विभक्त है। प्रत्येक खण्ड से दो आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किसी एक का उत्तर देना होगा। इनके लिए 60 (4 × 15) अंक निर्धारित हैं।

2. समूचे पाठ्यक्रम पर आधारित दस लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 250 शब्दों में देना होगा। इनके लिए 20 (5 × 4) अंक निर्धारित हैं।

3. समूचे पाठ्यक्रम पर ही आधारित बीस वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनके लिए 20 (1 × 20) अंक निर्धारित हैं। इस प्रश्न में कोई विकल्प नहीं होगा।

पाठ्य विषय :

खण्ड (क) भाषा, भाषा विज्ञान एवं स्वन-प्रक्रिया

भाषा की परिभाषा और अभिलक्षण; भाषा-व्यवस्था और भाषा-व्यवहार; भाषा-संरचना और भाषिक प्रकार्य; भाषा विज्ञान; स्वरूप एवं व्याप्ति; भाषा विज्ञान के अध्ययन की दिशाएँ,-वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक; स्वनविज्ञान का स्वरूप और शाखाएँ; वागवयव और उनके कार्य; स्वन की अवधारणा और स्वनों का वर्गीकरण; स्वनगुण, स्वनिक परिवर्तन; स्वनिम विज्ञान का स्वरूप; स्वनिम की अवधारणा; स्वनिम के भेद; स्वनिमिक विश्लेषण।

खण्ड (ख) रूपविज्ञान एवं अर्थविज्ञान

रूप-प्रक्रिया का स्वरूप और शाखाएँ; रूपिम की अवधारणा और भेद; मुक्त, आबद्ध, अर्थदर्शी और सम्बन्धदर्शी; सम्बन्धदर्शी रूपिम के भेद और प्रकार्य; वाक्य की अवधारणा; अभिहितान्वयवाद और अन्विताभिधानवाद; वाक्य के भेद; वाक्य विश्लेषण;

निकटस्थ अवयव विश्लेषण; गहन संरचना और बाह्य संरचना; अर्थ की अवधारणा; शब्द और अर्थ का सम्बन्ध; पर्यायता; अनेकार्थता; विलोमता; अर्थ-परिवर्तनः कारण एवं दिशाएँ; साहित्य के अध्ययन में भाषा विज्ञान के अंकों की उपयोगिता।

खण्ड (ग) हिन्दी भाषा : ऐतिहासिक एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि

प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ—वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ; मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ—पालि, प्राकृत, शौरसेनी, अर्द्धमागधी, मागधी; अपभ्रंश और उसकी विशेषताएँ; आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण; हिन्दी की उपभाषाएँ—पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी और उनकी बोलियाँ, खड़ी बोली, ब्रज और अवधी की विशेषताएँ; हिंन्दी की स्वनिम व्यवस्था—खंड्य एवं खण्ड्येतर; हिन्दी शब्द रचना—उपसर्ग; प्रत्यय, समास; स्मरचना—लिंग, वचन और कारक-व्यवस्था के संदर्भ में हिन्दी के संज्ञा, सर्वनाम, विश्लेषण और क्रियारूप; हिन्दी वाक्य रचनाः पदक्रम और अन्विति।

खण्ड (घ) हिन्दी का भाषिक रूप

हिन्दी के विविध रूप : सम्पर्क भाषा. राष्ट्र भाषा; राजभाषा, माध्यम भाषा; संचार-भाषा; हिन्दी की सांविधानिक स्थिति; हिन्दी में कम्प्यूटर सुविधाएँ : आंकड़ा-संसाधन और शब्द-संसाधन; वर्तनी शोधकः मशीनी अनुवाद; हिन्दी भाषा-शिक्षणः स्वरूप एवं उद्देश्य; हिन्दी उच्चारण, वर्तनी और व्याकरण का शिक्षण; देवनागरी लिपिः विशेषताएँ और मानकीकरण।

सन्दर्भ सामग्री :

1. भाषा और भाषिकी; देवी शंकर द्विवेदी; राधाकृष्ण; दिल्ली, 1993।
2. भाषा विज्ञान की भूमिका; देवेन्द्रनाथ शर्मा; राधाकृष्ण, 1989।
3. भाषाविज्ञान; भोलानाथ तिवारी; किताब महल; इलाहाबाद, 1997।
4. मानक हिन्दी का संरचनात्मक भाषाविज्ञान; ओमप्रकाश भारद्वाज; आर्य बुक डिपो; दिल्ली, 1980।
5. भाषाविज्ञान और मानक हिन्दी; नरेश मिश्र; अभिनव प्रकाशन; दिल्ली, 1993।
6. आधुनिक भाषाविज्ञान; कृपाशंकर सिंह एवं चतुर्भुज सहाय; नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1997।
7. आधुनिक भाषाविज्ञान; राजमणि शर्मा; वाणी प्रकाशन; दिल्ली 1996।
8. भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र; कपिलदेव द्विवेदी; विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1997।
9. हिन्दी भाषा : उद्गम और विकास; उदयनारायण तिवारी।
10. हिन्दी भाषा : भोलानाथ तिवारी; किताब महल; दिल्ली, 1991।
11. हिन्दी : उद्भव और विकास; हरदेव बाहरी; किताब महल; इलाहाबाद, 1965
12. हिन्दी भाषा का विकास; देवेन्द्रनाथ शर्मा एवं रामदेव त्रिपाठी; राधाकृष्ण;

दिल्ली, 1971।

13. हिन्दी भाषा : रूप विचार; सरनाम सिंह शर्मा "अरूण"; चिन्मय प्रकाशन; जयपुर, 1962।
14. देवनागरी; देवीशंकर द्विवेदी; प्रशांत प्रकाशन; कुरुक्षेत्र, 1990।
15. देवनागरी लेखन तथा हिन्दी वर्तनी; लक्ष्मीनारायण शर्मा; केन्द्रीय हिन्दी संस्थान; आगरा, 1976।
16. भाषाविज्ञान के सिद्धान्त और हिन्दी भाषा; द्वारिका प्रसाद सक्सेना; मीनाक्षी प्रकाशन; दिल्ली, 1972।
17. भाषा शिक्षण; रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव; सहकारी प्रकाशन; दिल्ली, 1981।
18. भाषा और भाषाविज्ञान; नरेश मिश्र; निर्मल पब्लिकेशन्स; दिल्ली, 2001।
19. आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धान्त; रामकिशोर शर्मा; लोकभारती प्रकाशन; इलाहाबाद 1998।
20. अनुवाद विज्ञान; राजमणि शर्मा; वाणी प्रकाशन; दिल्ली, 2002।
21. अनुवाद विज्ञान और सम्प्रेषण; हरिमोहन; तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली, 1984।
22. शैली विज्ञान और आलोचना की नयी भूमिका; रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव; केन्द्रीय हिन्दी संस्थान; आगरा, 1980।

प्रश्न पत्र–2 हिन्दी साहित्य का इतिहास

पूर्णांक : ~~100~~ 80

आन्तरिक मूल्यांकन – 20

समय : 3 घण्टे

निर्देशः 1. पाठ्यक्रम चार खण्डों में विभक्त है। प्रत्येक खण्ड से दो आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किसी एक का उत्तर देना होगा। इनके लिए 60 (48) (4 × 15 (12)) अंक निर्धारित हैं।

2. समूचे पाठ्यक्रम पर आधारित दस लघूतरी प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 250 शब्दों में देना होगा। इनके लिए 20 (5 × 4) अंक नियत हैं।

3. समूचे पाठ्यक्रम पर ही आधारित वीस वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनके लिए 20 (12) (1 × 20 (12)) अंक निर्धारित हैं। इस प्रश्न में कोई विकल्प नहीं होगा।

पाठ्य विषय :

खण्ड (क)

हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्शन;
हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा;
हिन्दी साहित्येतिहास की आधारभूत सामग्री और उसके पुनर्लेखन की समस्याएँ;

हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन और नामकरण;
आदिकाल की परिस्थितियाँ;
रासो काव्य : परम्परा और प्रवृत्तियाँ;
पृथ्वीराज रासो : प्रामाणिकता का प्रश्न और काव्य-सौन्दर्य;
सिद्ध साहित्य : परम्परा और प्रवृत्तियाँ;
नाथ साहित्य : परम्परा और प्रवृत्तियाँ;
जैन साहित्य : परम्परा और प्रवृत्तियाँ;
अमीर खुसरो की हिन्दी कविता;
विद्यापति और उनकी पदावली;
आदिकालीन गद्य-साहित्य।

खण्ड (ख)

भक्ति आंदोलन : उदय के सामाजिक-सांस्कृतिक कारण;
आलवार सन्त और उनका काव्य;
हिन्दी संतकाव्य का वैचारिक आधार;
सन्तकाव्य : परम्परा और प्रवृत्तियाँ (कबीर, नानक, दादू, रैदास);
हिन्दी सूफी काव्य का वैचारिक आधार;
सूफी काव्य : परम्परा और प्रवृत्तियाँ (मुल्ला दाऊद, कुतुबन, मंझन, जायसी);
सूफी काव्य में भारतीय संस्कृति और लोक जीवन;
रामकाव्य : परम्परा और प्रवृत्तियाँ;
तुलसीदास की प्रमुख कृतियाँ : काव्य-रूप और महत्त्व;
कृष्णकाव्य : विविध सम्प्रदाय;
कृष्णकाव्य : परम्परा और प्रवृत्तियाँ (अष्टछाप);
रामकृष्ण काव्येतर काव्य;
भक्तिकालीन भक्तितर काव्य;
भक्तिकालीन : स्वर्णयुग;
भक्तिकालीन गद्य साहित्य।

खण्ड (ग)

रीतिकाल : सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य;
रीतिकाल का नामकरण;
रीतिकाल के मूल स्रोत;
दरबारी संस्कृति और लक्षणग्रन्थ परम्परा;
रीति कवियों का आचार्यत्व;
रीतिकाल के प्रमुख कवि (केशव, मतिराम, भूषण, देव, पद्माकर, बिहारी, घनानन्द);
रीतिकाव्य में लोक जीवन;
रीतिबद्ध काव्य : सामान्य प्रवृत्तियाँ;

रीतिसिद्ध काव्य : सामान्य प्रवृत्तियाँ;
रीतिमुक्त काव्य : सामान्य प्रवृत्तियाँ;
रीतिकालीन वीरकाव्य : सामान्य प्रवृत्तियाँ;
रीतिकालीन नीतिकाव्य : सामान्य प्रवृत्तियाँ;
रीतिकालीन गद्य-साहित्य।

खण्ड (घ)

आधुनिककाल और भारतीय नवजागरण;
भारतेन्दु और उनका काव्य;
भारतेन्दु और उनका मण्डल;
द्विवेदी युगीन काव्य और उसकी सामान्य प्रवृत्तियाँ;
राष्ट्रीय काव्यधारा : प्रमुख कवि और काव्य;
स्वच्छन्दतावाद : प्रमुख कवि और काव्य;
छायावादी काव्य (प्रसाद, निराला, पन्त और महादेवी);
सामान्य प्रवृत्तियाँ,
प्रगतिवादी काव्य : परम्परा और प्रवृत्तियाँ;
प्रयोगवाद : कवि और काव्य;
नयी कविता : प्रमुख कवि और प्रवृत्तियाँ;
आधुनिकता बनाम समकालीनता;
समकालीन कविता : कवि और काव्य;
हिन्दी नवगीत : परम्परा और प्रवृत्तियाँ;
भारतेन्दु-पूर्व हिन्दी गद्य;
हिन्दी पत्रकारिता : उद्‌भव और विकास;
हिन्दी नाटक : उद्‌भव और विकास;
हिन्दी एकाकी : उद्‌भव और विकास;
हिन्दी कहानी और उसके आन्दोलन;
हिन्दी उपन्यास : उद्‌भव और विकास;
हिन्दी निबन्ध : उद्‌भव और विकास;
हिन्दी आलोचना : उद्‌भव और विकास;
हिन्दी रेखाचित्र एवं संस्मरण साहित्य : उद्‌भव और विकास;
हिन्दी यात्रा साहित्य : उद्‌भव और विकास;
हिन्दी आत्मकथा एवं जीवनी साहित्य : उद्‌भवक्त;
हिन्दी डायरी साहित्य : उद्‌भव और विकास;
हिन्दी रिपोर्ताज साहित्य : उद्‌भव और विकास;
दक्खिनी हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त परिचय;

उर्दू साहित्य का संक्षिप्त परिचय;

हिन्दीतर क्षेत्रों तथा देशान्तर में हिन्दी भाषा।

सन्दर्भ सामग्री :

1. ~~साहित्येतिहास : संरचना और स्वरूप।~~
2. हिन्दी साहित्येतिहास : पाश्चात्य स्रोतों का अध्ययन : हरमहेन्द्र सिंह बेदी; प्रतिभा प्रकाशन; होशियारपुर, 1985।
3. हिन्दी साहित्य का आदिकाल; हजारी प्रसाद द्विवेदी; बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्; पटना, 1961।
4. हिन्दी साहित्य की भूमिका; हजारीप्रसाद द्विवेदी; हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर; बम्बई, 1963।
5. शृंगारकाल का पुनर्मूल्यांकन; रमेशकुमार शर्मा; आर्य बुक डिपो; दिल्ली, 1978।
6. हिन्दी साहित्य का अतीत (भाग–2); विश्वनाथप्रसाद मिश्र; वाणी वितान प्रकाशन; वाराणसी, 1960।
7. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास; लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय; राजपाल एण्ड सन्स; दिल्ली, 1982।
8. हिन्दी साहित्य का इतिहास; रामचन्द्र शुक्ल; नागरी प्रचारिणी सभा; काशी, 1961।
9. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास; रामकुमार वर्मा; रामनारायणलाल बेनी माधव; इलाहाबाद, 1971।
10. हिन्दी साहित्य का इतिहास; (सम्पादक) नगेन्द्र; नेशनल पब्लिशिंग हाउस; दिल्ली, 1973।
11. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (दो खण्ड); गणपतिचन्द्र गुप्त; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1989 एवं 1990।
12. हिन्दी साहित्य का इतिहास; हरिश्चन्द्र वर्मा एवं रामनिवास गुप्त; मंथन पब्लिकेशन्स, रोहतक, 1982।
13. हिन्दी साहित्य का इतिहास; विजयेन्द्र स्नातक; साहित्य अकादमी; दिल्ली, 1996।
14. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास; बच्चन सिंह; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1996।
15. हिन्दी साहित्य का वस्तुपरक इतिहास (दो खण्ड); रामप्रसाद मिश्र; सत्साहित्य भण्डार; दिल्ली, 1998।
16. हिन्दी साहित्य का इतिहास; लालचन्द गुप्त "मंगल"; यूनिवर्सिटी बुक सैन्टर; कुरुक्षेत्र, 1999।

17. हिन्दी साहित्य का इतिहास (काल विभाजन एवं नामकरण); रमेशचन्द गुप्त; निर्मल बुक एजेन्सी; कुरुक्षेत्र, 2002।

प्रश्न पत्र-3 आधुनिक गद्य-साहित्य

पूर्णांक : 100
समय : 3 घण्टे

निर्देशः 1. समूचा पाठ्यक्रम चार खण्डों में विभक्त है—

(क) सन्दर्भ सहित व्याख्या; (ख) आलोचनात्मक प्रश्न;
(ग) वस्तुनिष्ठ प्रश्न; (घ) लघूतरी प्रश्न।

2. खण्ड (क) सन्दर्भ सहित व्याख्या से सम्बन्धित है। व्याख्यार्थ निर्धारित तीन पुस्तकों (चन्द्रगुप्त, निबन्ध-निलय, कथा-भूमि) में से दो-दो अवतरण दिए जाएंगे, जिनमें से एक-एक अंश की व्याख्या करनी होगी। यह खण्ड 30 (3 × 10) अंकों का होगा।

3. खण्ड (ख) आलोचनात्मक प्रश्नों से सम्बन्धित है। आलोचनात्मक प्रश्नों के लिए निर्धारित पुस्तकों (गोदान, मैला आँचल, पथ के साथी) और उनके रचनाकारों पर दो-दो आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा। यह खण्ड 45 (3 × 15) अंकों का होगा।

4. खण्ड (ग) वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से सम्बन्धित है। यहाँ उपर्युक्त छहों पुस्तकों और उनके रचनाकारों पर आधारित दस वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगे। इस प्रश्न में कोई विकल्प नहीं होगा। यह खण्ड 10 (1 × 10) अंकों का होगा।

5. खण्ड (घ) लघूतरी प्रश्नों से सम्बन्धित है। यहाँ पांच नाटककारों (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, उपेन्द्रनाथ अश्क, विष्णु प्रभाकर, लक्ष्मीनारायण लाल, शंकर शेष), पांच उपन्यासकारों (जेनेन्द्र कुमार, भगवतीचरण वर्मा), अमृतलाल नागर, बालशौरि रेड्डी, मन्नू भण्डारी), पांच कहानीकारों (बंग महिला, अज्ञेय, यशपाल, बेचनशर्मा उग्र, अमरकान्त), पांच स्फुट-गद्यकारों (अमृतराय-कलम का सिपाही, शिवप्रसाद सिंह उत्तरयोगी, हरिवंशराय बच्चन-क्या भूलूं क्या याद करूं, राहुल-सांस्कृत्यायन-घुमक्कड़ शास्त्र, माखनलाल चतुर्वेदी-साहित्य-देवता) तथा उनकी कृतियों का द्रुत-पाठ अपेक्षित है। प्रश्न-पत्र में प्रत्येक विधा से सम्बन्धित दो प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किसी एक का उत्तर देना होगा। इस प्रकार इस खण्ड में कुल पांच लघूतरी प्रश्न करने होंगे। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 250 शब्दों का होगा। इस खण्ड के लिए 15 (5 × 3) अंक निर्धारित हैं।

व्याख्या हेतु निर्धारित पाठ्य ग्रन्थ :

1. चन्द्रगुप्त; जयशंकर प्रसाद; प्रसाद प्रकाशन; इलाहाबाद।

2. निबन्ध-निलय; डॉ० सत्येन्द्र (सं०); वाणी प्रकाशन; नई दिल्ली।

3. कथाभूमि; डॉ० चितरंजन मिश्र (सं०); राधाकृष्ण; नयी दिल्ली।

निर्धारित आलोचनात्मक प्रश्न :

1. गोदान-प्रेमचन्द
   समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचन्द; प्रेमचन्द की भाषा-शैली; प्रेमचन्द की नारी-भावना; प्रेमचन्द की दलितचेतना; प्रेमचन्द का जीवन-दर्शन; महाकाव्यात्मक उपन्यास की परिकल्पना और गोदान;
   गोदान में गांव और शहर;
   गोदान और भारतीय किसान;
   गोदान में यथार्थ और आदर्श;
   गोदान के मुख्य चरित्र;

2. मैला आँचल—फणीश्वरनाथ रेणु
   आँचलिक उपन्यास परम्परा और रेणुक;
   आँचलिकता और मैला आँचल;
   "मैला आँचल" का वस्तु-विन्यास;
   नायकत्व;
   लोक-संस्कृति और भाषा;
   ग्राम्य जीवन में होने वाले राजनीतिक-आर्थिक परिवर्तनों का चित्रण;
   ग्राम्य जीवन के सामाजिक सम्बन्धों का चित्रण;

3. पथ के साथी-महादेवी वर्मा।
   "पथ के साथी" का साहित्य-रूप; "पथ के साथी" में संकलित प्रत्येक साहित्यकार के व्यक्तित्व का विवेचन-विश्लेषण; "पथ के साथी" की गद्य-शैली।

सन्दर्भ-सामग्री :

1. हिन्दी उपन्यास की प्रवृत्तियाँ; शशिभूषण सिंहल; विनोद पुस्तक मन्दिर; आगरा, 1986।
2. प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यास (भाग-1); यश गुलाटी; हरियाणा साहित्य अकादमी; चण्डीगढ़, 1989।
3. उपन्यास का आँचलिक वातायन; रामपत यादव; चिन्ता प्रकाशन दिल्ली, 1985।
4. फणीश्वरनाथ रेणु और मैला आँचल; गोपाल राय; नैशनल पब्लिशिंग हाउस; दिल्ली, 1992।
5. "मैला आँचल" की रचना-प्रक्रिया, देवेश ठाकुर; वाणी प्रकाशन, दिल्ली,

1987।

6. कथाकार अज्ञेय; चन्द्रकान्त पं॰ वाँदिवडेकर; हरियाणा साहित्य अकादमी; चण्डीगढ़, 1993।
7. प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन; जगन्नाथ प्रसाद शर्मा; सरस्वती मन्दिर; वाराणसी, 1960।
8. निबन्धः साहित्य और प्रयोग; हरिनाथ द्विवेदी; बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी; पटना, 1971।
9. हिन्दी निबन्ध के आलोक शिखर; जयनाथ "नलिन"; मनीषा प्रकाशन, दिल्ली, 1987।
10. हिन्दी निबन्ध साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन; बाबूराम; वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2002।
11. बच्चन; निकष पर; रमेश गुप्त; राजकमल प्रकाशन; दिल्ली, 1979।
12. महादेवी वर्मा; कवि और गद्यकार; लक्ष्मणदत्त गौतम; कोणार्क प्रकाशन, दिल्ली।
13. हिन्दी कहानी का इतिहास; लालचन्द गुप्त "मंगल"; संजीव प्रकाशन; कुरुक्षेत्र, 1988।
14. समकालीन हिन्दी कहानी; पुष्पपाल सिंह; हरियाणा साहित्य अकादमी; चण्डीगढ़, 1987।

प्रश्न पत्र–4 आधुनिक हिन्दी काव्य

80

पूर्णांक : 100 20

समय : 3 घण्टे

निर्देशः 1. समूचा पाठ्यक्रम चार खण्डों में विभक्त है—

(क) सन्दर्भ सहित व्याख्या; (ख) आलोचनात्मक प्रश्न;

(ग) वस्तुनिष्ठ प्रश्न; (घ) लघूत्तरी प्रश्न।

2. खण्ड (क) सन्दर्भ सहित व्याख्या से सम्बन्धित है। व्याख्यार्थ तीन कवियों (जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला"; गजानन माधव–मुक्तिबोध) को निर्धारित कविताओं में से दो–दो अवतरण दिए जाएंगे, जिनमें से एक–एक अंश की व्याख्या करनी होगी। यह खण्ड 21 30 (3 × 7 10) अंकों का होगा।

3. खण्ड (ख) आलोचनात्मक प्रश्नों से सम्बन्धित है। आलोचनात्मक प्रश्नों के लिए निर्धारित कवियों (सुमित्रानन्दन पंत, रामधारी सिंह "दिनकर", सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन "अज्ञेय" और उनकी कृतियों पद दो–दो आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से एक–एक प्रश्न का उत्तर देना होगा। यह खण्ड

45 (3 × 15) अंकों का होगा।

4. खण्ड (ग) वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से सम्बन्धित है। यहाँ उपर्युक्त छहों कवियों और उनकी कृतियों पर आधारित दस वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगे। इस प्रश्न में विकल्प नहीं होगा। यह खण्ड 10 (1 × 10) अंकों का होगा।

5. खण्ड (घ) लघूतरी प्रश्नों से सम्बन्धित है। यहां दस कवियों (अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध", महादेवी वर्मा, हरिवंशराय वच्चन, केदारनाथ अग्रवाल, गिरिजा–कुमार माथुर, भवानी प्रसाद मिश्र, नरेश मेहता, धर्मवीर भारती, रघुवीर सहाय, दुष्यन्त कुमार) तथा उनकी कृतियों का द्रुत–पाठ अपेक्षित हैं। प्रश्न पत्र में प्रत्येक कवि से सम्बन्धित एक–एक प्रश्न (कुल दस) पूछा जाएगा, जिनमें से किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 250 शब्दों का होगा। इस खण्ड के लिए 15 (5 × 3) अंक निर्धारित हैं।

व्याख्या हेतु निर्धारित पाठ्य ग्रन्थ :

1. कामायनी; जयशंकर प्रसाद; "चिन्ता", श्रद्धा और "लज्जा (= कुल तीन सर्ग)।
2. राग विराग; सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला", ("राम की शक्तिपूजा" "सरोज–स्मृति" एवं कुकुरमुत्ता) = कुल तीन कविताएँ।
3. अंधेरे में; मुक्तिबोध = कुल एक कविता।

निर्धारित आलोचनात्मक प्रश्न

1. पंत—काव्य यात्रा के विविध सोपान; जीवन–दर्शन, प्रकृति–चित्रण, कल्पनाशीलता; सौन्दर्य–चेतना; काव्य–भाषा।
2. दिनकर—उर्वशी में कामाध्यात्म; सौन्दर्य चेतना; संवाद–कौशल; महाकाव्यत्व; तृतीय अंक की विशेषताएँ।
3. अज्ञेय—प्रयोगधर्मिता; वैयक्तिकता और सामाजिकता; अभिव्यंजना–पक्ष।

सन्दर्भ सामग्री :

1. छायावाद युगीन काव्य : अविनाश भारद्वाज; तक्षशिला प्रकाशन; दिल्ली, 1984।
2. प्रसाद और कामायनी; मूल्यांकन का प्रश्न; नगेन्द्र; नेशनल पब्लिशिंग हाउस; दिल्ली, 1990।
3. कामायनी में काव्य; संस्कृति और दर्शन; द्वारिकाप्रसाद सक्सेना; विनोद पुस्तक मन्दिर; आगरा, 1978।
4. रामेश्वरलाल खण्डेलवाल; जयशंकर प्रसाद: वस्तु और कला; नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1968।
5. निराला; पदमसिंह शर्मा "कमलेश"; राधाकृष्ण; दिल्ली 1969।

6. काव्यपुरुष निराला; जयनाथ "नलिन"; आलोक प्रकाशन; कुरुक्षेत्र, 1970।
7. निराला की काव्य चेतना; हुकुमचन्द राजपाल; सूर्यभारती प्रकाशन; दिल्ली, 1993।
8. सुमित्रानन्दन पंत; काव्य कला और जीवन दर्शन; शुचीरानी गुर्टू; आत्माराय एंड संस; दिल्ली, 1951।
9. पंत का काव्य : शिवपाल सिंह; साहित्य रत्नालय; कानपुर, 1987।
10. "अज्ञेय" कवि; ओमप्रकाश अवस्थी; ग्रन्थम; कानपुर, 1977।
11. काव्य भाषा : रचनात्मक सरोकार; राजमणि शर्मा; वाणी प्रकाशन; दिल्ली, 2001।
12. बीसवीं शताब्दी की हिन्दी कविता; मदन गुलाटी; अनुपम प्रकाशन; करनाल, 2000।
13. साठोत्तरी, हिन्दी कविता में क्रान्ति और सृजन; मीरा गौतम; निर्मल पब्लिकेशन्स; दिल्ली, 1996।
14. मुक्तिबोध का साहित्य विवेक और उनकी कविता; लल्लनराय; मंथन पब्लिकेशन्स; रोहतक, 1982।
15. नयी कविता की नाट्यमुखी भूमिका; हुकुमचन्द राजपाल, वाणी प्रकाशन; दिल्ली 1975।
16. नयी कविता का इतिहास; बैजनाथ सिंहल; संजय प्रकाशन, दिल्ली, 1977।
17. कविता और संघर्ष चेतना; यश गुलाटी; इन्द्रपस्थ प्रकाशन; दिल्ली, 1986।

प्रश्न पत्र–5

(प्रश्न पत्र–5 के अन्तर्गत विशिष्ट अध्ययन अपेक्षित है।)

यहाँ निर्धारित प्रश्न–पत्रों में से परीक्षार्थी किसी एक का अध्ययन करेगा।

प्रश्न पत्र–5 (I) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

पूर्णांक : ~~100~~ 80

समय : 3 घण्टे

निर्देशः 1. समूचा पाठ्यक्रम चार खण्डों में विभक्त है–(क) संदर्भ सहित व्याख्या, (ख) आलोचनात्मक प्रश्न (ग) लघूत्तरी प्रश्न (घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न।

2. खण्ड (क) सन्दर्भ सहित व्याख्या से सम्बन्धित है। व्याख्यार्थ निर्धारित तीन पुस्तकों (भारत दुर्दशा, नीलदेवी, प्रेम माधुरी) में दो–दो अवतरण दिए जाएंगे, जिनमें से एक–एक अवतरण की व्याख्या करनी होगी। यह खण्ड ~~30~~ 21 (3 × ~~10~~ 7) अंकों का होगा।

3. खण्ड (ख) आलोचनात्मक प्रश्नों से सम्बन्धित है। आलोचनात्मक प्रश्नों के लिए निर्धारित पुस्तकों (प्रेमतरंग, हिन्दी की उन्नति पर व्याख्यान, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के श्रेष्ठ निबन्ध) पर दो-दो आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा। यह खण्ड 45 (3 × 15) अंकों का होगा।

4. खण्ड (ग) लघूत्तरी प्रश्नों से सम्बन्धित है। यहाँ उपर्युक्त छहों कृतियों का द्रुत-पाठ अपेक्षित है। प्रश्न-पत्र में दस प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर लगभग 250 शब्दों का होगा। इस खण्ड के लिए 15 (5 × 3) अंक निर्धारित हैं।

5. खण्ड (घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से सम्बन्धित है। उपर्युक्त छहों पुस्तकों पर आधारित दस वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगे। इस प्रश्न में कोई विकल्प नहीं होगा। यह खण्ड 10 (1 × 10) अंकों का होगा।

व्याख्या हेतु निर्धारित पाठ्य ग्रन्थ

1. भारत दुर्दशा; भारतेन्दु हरिश्चन्द्र; भारतेन्दु समग्र; हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी।
2. नीलदेवी; भारतेन्दु हरिश्चन्द्र; भारतेन्दु समग्र, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी।
3. प्रेम-माधुरी; भारतेन्दु हरिश्चन्द्र; भारतेन्दु समग्र, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी।

आलोचनात्मक एवं लघूत्तरी प्रश्नों के लिए निर्धारित रचनाएं एवं विषय

1. प्रेम तरंग भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
2. हिन्दी की उन्नति पर व्याख्यान भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
3. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के श्रेष्ठ निबन्ध संपादक, कृष्णदत्त पालीवाल, सचिन प्रकाशन, दिल्ली।

भारतेन्दुयुगीन परिवेश;
भारतेन्दु का जीवन-चरित;
भारतेन्दु की साहित्यिक यात्रा;
हिन्दी-पत्रकारिता के विकास में भारतेन्दु का योगदान;
भारतेन्दु की जीवन दृष्टि;
भारतेन्दु : राजभक्त या राष्ट्रभक्त;
स्वदेशी आन्दोलन के प्रेरणास्रोत भारतेन्दु;
भारतेन्दु का हिन्दी भाषा के प्रति दृष्टिकोण;
भारतेन्दु का अन्य भाषाओं के प्रति दृष्टिकोण;
स्वच्छन्दतामूलक प्रेम और भारतेन्दु;
"प्रेमतरंग" का कथ्य;

"प्रेमतरंग" की भाषा शैली;
भारतेन्दु की निबन्ध-कला;
भारतेन्दु के निबन्धों का कथ्य;
भारतेन्दु के निबन्धों की भाषा-शैली;
भारतेन्दु की नाटक सम्बन्धी अवधारणाएँ;
भारतेन्दु के अनुसार "जातीय संगीत" की उपयोगिता;
भारतेन्दु की सामाजिक चेतना;
भारतेन्दु का नारी-स्वातंत्र्य सम्बन्धी दृष्टिकोण;
भारतेन्दु का धर्म सम्बन्धी दर्शन;
भारतेन्दु की नाट्यकला;
हिन्दी रंगमंच की नाट्यकला;
हिन्दी रंगमंच के विकास में भारतेन्दु का योगदान।

सन्दर्भ सामग्री :

1. भारतेन्दु का नाट्य साहित्य; डॉ॰ वीरेन्द्र कुमार।
2. भारतेन्दु का गद्य साहित्य : समाजशास्त्रीय अध्ययन; डॉ॰ कपिलदेव दुबे।
3. भारतेन्दु के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन; डॉ॰ गोपीनाथ तिवारी।
4. भारतेन्दु के निबन्ध; डॉ॰ केसरी नारायण शुक्ल।
5. भारतेन्दु युग का नाट्य साहित्य और रंगमंच; डॉ॰ वासुदेव नन्दन प्रसाद।
6. भारतेन्दु युग की शब्द सम्पदा; डॉ॰ जसपाली चौहान।
7. भारतेन्दु साहित्य; डॉ॰ रामगोपाल चौहान।
8. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र; बापू ब्रजरत्न दास।
9. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : साहित्य और जीवन-दर्शन; डॉ॰ रमेश गुप्त।

प्रश्न पत्र-5 (II) जयशंकर प्रसाद

80

पूर्णांक : 100

समय : 3 घण्टे

निर्देशः 1. समूचा पाठ्यक्रम चार खण्डों में विभक्त है—
(क) सन्दर्भ सहित व्याख्या, (ख) आलोचनात्मक प्रश्न,
(ग) लघूत्तरी प्रश्न, (घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न।

2. खण्ड (क) सन्दर्भ सहित व्याख्या से सम्बन्धित है। व्याख्यार्थ निर्धारित तीन

पुस्तकों (लहर, छाया, काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध) में से दो–दो अवतरण दिए जाएंगे, जिनमें से एक–एक अवतरण की व्याख्या करनी होगी। यह खण्ड 30 (3 × 10) अंकों का होगा।

3. खण्ड (ख) आलोचनात्मक प्रश्नों से सम्बन्धित है। आलोचनात्मक प्रश्नों के लिए निर्धारित पुस्तकों (कामायनी, स्कंदगुप्त, कंकाल) पर दो–दो आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से एक–एक प्रश्न का उत्तर देना होगा। यह खण्ड 45 (3 × 15) अंकों का होगा।

4. खण्ड (ग) लघूत्तरी प्रश्नों से सम्बन्धित है। यहाँ उपर्युक्त छहों कृतियों पर आधारित दस प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से पांच प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर लगभग 250 शब्दों का होगा। इस खण्ड के लिए 15 (5 × 3) अंक निर्धारित हैं।

5. खण्ड (घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से सम्बन्धित है। उपर्युक्त छहों पुस्तकों पर आधारित दस वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगे। इस प्रश्न में कोई विकल्प नहीं होगा। यह खण्ड 10 (1 × 10) अंकों का होगा।

व्याख्या हेतु निर्धारित पाठ्य ग्रन्थ

1. लहर (कविता–संग्रह)
2. छाया (कहानी–संग्रह)
3. काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध (निबन्ध–संग्रह)

आलोचनात्मक एवं लघूत्तरी प्रश्नों के लिए निर्धारित विषय

जयशंकर प्रसाद : व्यक्तित्व एवं कृतित्व; प्रसाद का जीवन–दर्शन; वर्तमान संदर्भ में प्रसाद–साहित्य की प्रासंगिकता; कामायनी : एक छायावादी रचना; दार्शनिक पृष्ठभूमि–शैवदर्शन; समरसता और आनन्दवाद; मनोवैज्ञानिक पक्ष; रूपक तत्व; महाकाव्यत्व; सौन्दर्यदृष्टि; मिथल और फैण्टेसी; "आशा", "इड़ा", और "आनन्द" सर्गों पर समीक्षात्मक प्रश्न। लहर : भावात्मक और वैयक्तिक चेतना; नामकरण और काव्य–रूप; काव्य–सौंदर्य नाटककार प्रसाद: एक सिंहावलोकन; स्कन्दगुप्त की ऐतिहासिकता; राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि; पात्र–परिकल्पना; स्कन्दगुप्त और रंगमंच; गीति तत्व; पाश्चात्य और भारतीय नाट्य लक्षणों का समन्वय, प्रसाद की कहानी कला का विकास; भावभूमि; प्रसाद की उपन्यास कला का विज्ञान; कंकाल : प्रतिपाद्य और उद्देश्य;

संदर्भ सामग्री।

प्रसाद का काव्य; प्रेमशंकर; भारती भण्डार, इलाहाबाद, 1961।

कामायनी : एक सह–चिन्तन; वचनदेव कुमार एवं दिनेश्वर प्रसाद; क्लासिक पब्लिशिंग कम्पनी, दिल्ली, 1983।

कामायनी–अनुशीलन; रामलाल सिंह; इण्डियन प्रैस, लिमिटेड, प्रयाग, 1975।

प्रसाद का साहित्य; प्रभाकर क्षोत्रिय आत्माराम एंड सन्स, दिल्ली, 1975।
जयशंकर प्रसाद; रमेशचन्द्र शाह; साहित्य अकादमी, दिल्ली, 1977।
प्रसाद का नाट्य साहित्य; परम्परा और प्रयोग; हरिश्चन्द्र; प्रकाशन प्रतिष्ठान, मेरठ; प्रथम संस्करण।
लहर–सौन्दर्य; सत्यवीर सिंह; सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली; 1977।
प्रसाद का गद्य–साहित्य; राजमणि शर्मा, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, 1982।

प्रश्न पत्र–5 (III) सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला"

पूर्णांक : 100
समय : 3 घण्टे

निर्देशः 1. समूचा पाठ्यक्रम चार खण्डों में विभक्त है—
(क) सन्दर्भ सहित व्याख्या, (ख) आलोचनात्मक प्रश्न,
(ग) लघूत्तरी प्रश्न, (घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न।

2. खण्ड (क) सन्दर्भ सहित व्याख्या से सम्बन्धित है। व्याख्यार्थ निर्धारित तीन पुस्तकों (राग विराग, निरूपमा, लिलि) में से दो–दो अवतरण दिए जाएंगे, जिनमें से एक–एक अवतरण की व्याख्या करनी होगी। यह खण्ड 30 (3 × 10) अंकों का होगा।
3. खण्ड (ख) आलोचनात्मक प्रश्नों से सम्बन्धित है। आलोचनात्मक प्रश्नों के लिए निर्धारित पुस्तकों (तुलसीदास, अलका, प्रबन्ध प्रतिमा) पर दो–दो आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से एक–एक प्रश्न का उत्तर देना होगा। यह खण्ड 45 (3 × 15) अंकों का होगा।
4. खण्ड (ग) लघूत्तरी प्रश्नों से सम्बन्धित है। यहाँ उपर्युक्त छहों कृतियों पर आधारित दस प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से पांच प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर लगभग 250 शब्दों का होगा। इस खण्ड के लिए 15 (5 × 3) अंक निर्धारित हैं।
5. खण्ड (घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से सम्बन्धित है। उपर्युक्त छहों पुस्तकों पर आधारित दस वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगे। इस प्रश्न में कोई विकल्प नहीं होगा। यह खण्ड 10 (1 × 10) अंकों का होगा।

व्याख्या हेतु निर्धारित पाठ्य ग्रन्थ
1. राग विराग (कविता–संग्रह)
2. निरूपमा (उपन्यास)
3. लिलि (कहानी–संग्रह)

आलोचनात्मक एवं लघूत्तरी प्रश्नों के लिए निर्धारित विषय

निराला और छायावाद;
निराला और रहस्यवाद;
निराला और प्रगतिवाद;
निराला और राष्ट्रीय चेतना;
निराला और विद्रोही चेतना;
"राम की शक्ति पूजा" : कथ्य एवं शिल्प;
"सरोज-स्मृति" : कथ्य एवं शिल्प;
"कुकुरमुत्ता"
"तुलसीदास" की वस्तु-योजना;
"तुलसीदास" में चिन्तन और दर्शन;
"तुलसीदास" में संस्कृति का स्वरूप;
"तुलसीदास" में मनोवैज्ञानिक चित्रण;
"तुलसीदास" में बिम्ब और प्रतीक;
"तुलसीदास" में रस-योजना;
कथाकार निराला :
निराला की उपन्यास-कला;
निराला के उपन्यास साहित्य के यथार्थ;
"अलका" उपन्यास की प्रमुख समस्या;
"अलका" उपन्यास के नारी पात्र;
"अलका" उपन्यास की आंचलिकता;
"अलका" उपन्यास की भाषा-शैली;
निबन्धकार निराला:
हिन्दी निबन्धकारों में निराला का स्थान;
"प्रबन्ध प्रतिमा" में संकलित निबन्धों की समीक्षा;
कहानीकार निराला;
जीवनीकार निराला;
आलोचक निराला;

संदर्भ सामग्री

निराला का गद्य; सूर्यप्रसाद दीक्षित; राधाकृष्ण प्रकाशन; दिल्ली।
निराला का गद्य साहित्य; प्रोमिला बिल्ला; चैतन्य प्रकाशन; कानपुर।
निराला का साहित्य और साधना; विश्वम्भरनाथ उपाध्याय; विनोद पुस्तक मन्दिर; आगरा।
निराला की साहित्य साधना; डॉ० रामविलास शर्मा; राजकमल प्रकाशन; दिल्ली
महाकवि निराला : काव्यकला; डॉ० विश्वम्भरनाथ उपाध्याय; सरस्वती पुस्तक सदन,

आगरा।

महाप्राण निराला: गंगाप्रसाद पाण्डेय; साहित्यकार परिषद; प्रयाग क्रान्तिकारी कवि निराला; बच्चनसिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन; वाराणसी।

कवि निराला; नन्दुलारे वाजपेयी; मेकमिलन; दिल्ली।

निराला का अलक्षित अर्थ-गौरव; शशिभूषण-शीतांशु; सरस्वती प्रैस, इलाहाबाद निराला का कथासाहित्य; कुसुम वार्ष्णेय; साहित्य भवन प्रा॰ लि॰; इलाहाबाद निराला के काव्य में बिम्ब और प्रतीक; वेदव्रत शर्मा; आर्य बुक डिपो; दिल्ली। निराला और उनका तुलसीदास रामकुमार शर्मा; पद्य बुक कम्पनी, जयपुर।

प्रश्न पत्र-5 (IV) प्रेमचन्द

पूर्णांक : 100

समय : 3 घण्टे

निर्देश: 1. समूचा पाठ्यक्रम चार खण्डों में विभक्त है—

(क) सन्दर्भ सहित व्याख्या, (ख) आलोचनात्मक प्रश्न,

(ग) लघूत्तरी प्रश्न, (घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न।

2. खण्ड (क) सन्दर्भ सहित व्याख्या से सम्बन्धित है। व्याख्यार्थ निर्धारित तीन पुस्तकों (गबन, प्रतिनिधि कहानियाँ, प्रेमचन्द के श्रेष्ठ निबन्ध) में से दो-दो अवतरण दिए जाएंगे, जिनमें से एक-एक अवतरण की व्याख्या करनी होगी। यह खण्ड 30 (3 × 10) अंकों का होगा।

3. खण्ड (ख) आलोचनात्मक प्रश्नों से सम्बन्धित है। आलोचनात्मक प्रश्नों के लिए निर्धारित पुस्तकों (सेवासदन, कर्मभूमि, कर्बला) पर दो-दो आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा। यह खण्ड 45 (3 × 15) अंकों का होगा।

4. खण्ड (ग) लघूत्तरी प्रश्नों से सम्बन्धित है। यहाँ उपर्युक्त छहों कृतियों का द्रुत पाठ अपेक्षित है। प्रश्न पत्र में दस प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से पांच प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर लगभग 250 शब्दों का होगा। इस खण्ड के लिए 15 (5 × 3) अंक निर्धारित हैं।

5. खण्ड (घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से सम्बन्धित है। उपर्युक्त छहों पुस्तकों पर आधारित दस वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगे। इस प्रश्न में कोई विकल्प नहीं होगा। यह खण्ड 10 (1 × 10) अंकों का होगा।

व्याख्या हेतु निर्धारित पाठ्य ग्रन्थ

1. गबन; प्रेमचन्द; हंस प्रकाशन; इलाहाबाद
2. प्रतिनिधि कहानियाँ; प्रेमचन्द; राजकमल प्रकाशन; दिल्ली।

\18.

3. प्रेमचन्द के श्रेष्ठ निबन्ध; सत्यप्रकाश; लोकभारती प्रकाशन; इलाहाबाद

आलोचनात्मक एवं लघूत्तरी प्रश्नों के लिए निर्धारित रचनाएँ एवं विषय

1. सेवा सदन; प्रेमचन्द; हंस प्रकाशन; इलाहाबाद।
2. कर्मभूमि; प्रेमचन्द; हंस प्रकाशन; इलाहाबाद।
3. कर्बला; प्रेमचन्द

प्रेमचन्दयुगीन परिवेश;
प्रेमचन्द का जीवन-दर्शन;
आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद और प्रेमचन्द;
प्रेमचन्द और गांधीवाद;
प्रेमचन्द की नारी भावना;
वर्तमान संदर्भों में प्रेमचन्द साहित्य की प्रासंगिकता;
प्रेमचन्द की सम्पादन-कला;
हिन्दी पत्रकारिता के विकास में प्रेमचन्द का योगदान;
"सेवासदन" : नामकरण;
"सेवासदन" में चित्रित समस्याएँ और समाधान;
"सेवासदन" : प्रासंगिकता;
कर्मभूमि और गांधीवाद;
कर्मभूमि की नायिका और उसका चरित्र-चित्रण;
कर्मभूमि का नायक और उसका चरित्र-चित्रण;
हिन्दी उपन्यास के विकास में प्रेमचन्द का योगदान;
प्रेमचन्द की उपन्यास-कला;
"कर्बला" नाटक का उद्देश्य;
"कर्बला" नाटक की रंगमंचीयता;
"कर्बला" नाटक की प्रासंगिकता;
प्रेमचन्द की नाट्य कला;
प्रेमचन्द की कहानियों का कथ्य;
प्रेमचन्द की कहानियों का शिल्प;
प्रेमचन्द की कहानी-कला;
प्रेमचन्द के निबन्धों का कथ्य;
प्रेमचन्द के निबन्धों का शिल्प;
प्रेमचन्द की निबन्ध-कला;

प्रेमचन्द की भाषा–शैली;

सन्दर्भ–सामग्री :

1. प्रेमचन्द चिन्तन और कला; इन्द्रनाथ मदान; सरस्वती प्रेस; बनारस, 1961।
2. प्रेमचन्द : जीवन, कला और कृतित्व; हंसराज रहबर; आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, 1962।
3. उपन्यासकार प्रेमचन्द; सुरेशचन्द गुप्त एवं रमेशचन्द्र गुप्त; अशोक प्रकाशन; दिल्ली, 1956।
4. प्रेमचन्दयुगीन भारतीय समाज; इन्द्रमोहन कुमार सिन्हा; बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी; पटना, 1974।
5. प्रेमचन्द; सत्येन्द्र; राधाकृष्ण प्रकाशन; दिल्ली, 1976।
6. प्रेमचन्द और उनका युग; रामविलास शर्मा; राजकमल प्रकाशन; दिल्ली, 1981।
7. समकालीन जीवन संदर्भ और प्रेमचन्द; धर्मेन्द्र गुप्त; पीयूष प्रकाशन; दिल्ली, 1988।
8. कहानीकार प्रेमचन्द; नूरजहाँ; हिन्दी साहित्य भण्डार; लखनऊ, 1975।
9. प्रेमचन्द और भारतीय किसान; रामबक्ष; वाणी प्रकाशन; दिल्ली, 1983।
10. प्रेमचन्द और उनका साहित्य; शीला गुप्ता; साहित्य भवन प्रा॰ लिमिटेड, इलाहाबाद, 1979।

प्रश्न पत्र–5 (V) पत्रकारिता–प्रशिक्षण

पूर्णांक : ~~100~~ 80

आन्तरिक मूल्यांकन 20 **समय : 3 घण्टे**

निर्देश: 1. समूचा पाठ्यक्रम चार खण्डों में विभक्त है—

(क) आलोचनात्मक प्रश्न, (ख) लघूत्तरी प्रश्न,

(ग) वस्तुनिष्ठ प्रश्न। (घ) प्रायोगिक कार्य।

2. खण्ड (क) आलोचनात्मक प्रश्नों से सम्बन्धित है। आलोचनात्मक प्रश्नों के लिए निर्धारित पाठ्य विषयों में से छह प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। यह खण्ड ~~60~~ 39 (3 × ~~20~~ 13) अंकों का होगा।

3. खण्ड (ख) लघूत्तरी प्रश्नों से सम्बन्धित है। निर्धारित पाठ्य विषयों में से 10 प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर लगभग 250 शब्दों का होगा। इस खण्ड के लिए 20 (5 × 4) अंक निर्धारित हैं।

4. खण्ड (ग) वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से सम्बन्धित है। समूचे पाठ्यक्रम पर आधारित दस प्रश्न पूछे जाएंगे। इस प्रश्न में कोई विकल्प नहीं होगा। यह खण्ड 10 (1 × 10) अंकों का होगा।
5. खण्ड (घ) "प्रायोगिक कार्य" से सम्बन्धित है। इस खण्ड में दो प्रेस-विज्ञप्तियाँ दी जाएंगी, जिनमें से किसी एक को आधार बनाकर परीक्षार्थी समाचार तैयार करेगा। इस खण्ड 10 अंकों का होगा।

आलोचनात्मक, लघूत्तरी एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के लिए निर्धारित विषय

1. पत्रकारिता : स्वरूप और प्रकार; विश्व-पत्रकारिता का उदय; भारत में पत्रकारिता का आरम्भ; हिन्दी पत्रकारिता : उद्‌भव और विकास; समाचार पत्रकारिता के मूल तत्व; समाचार संकलन तथा लेखन के मुख्य आयाम; समाचार के विभिन्न स्रोत।
2. संपादन कला के सामान्य सिद्धान्त (शीर्षक, पृष्ठ-विन्यास, आमुख और समाचार-पत्र की प्रस्तुति-प्रक्रिया); समाचार पत्रों के विभिन्न स्तरों की योजना; दृश्य सामग्री (कार्टून, रेखाचित्र, ग्रैफिक्स) की व्यवस्था और फोटो पत्रकारिता; संवाददाता की अर्हता, श्रेणी एवं कार्य-पद्धति; पत्रकारिता सम्बन्धी लेखन (सम्पादकीय, फीचर, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, खोजी समाचार, अनुवर्तन-फालोअप आदि की प्रविधि); इलैक्ट्रोनिक मीडिया की पत्रकारिता (रेडियो, टी॰ वी॰, वीडियो, केबल, मल्टी-मीडिया और इन्टरनेट); प्रिंट पत्रकारिता और मुद्रणकला; प्रूफशोधन, लेआउट तथा पृष्ठ सज्जा; पत्रकारिता प्रबन्ध (प्रशासनिक व्यवस्था, बिक्री तथा वितरण व्यवस्था)।
3. भारतीय संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकार; सूचनाधिकार, मानवाधिकार; मुक्त प्रेस की अवधारणा; लोक सम्पर्क तथा विज्ञापन; प्रसार भारती तथा सूचना प्रौद्योगिकी; प्रेस सम्बन्धी प्रमुख कानून तथा आचार संहिता; प्रजातांत्रिक व्यवस्था में चतुर्थ स्तंभ के रूप में पत्रकारिता का दायित्व।

सन्दर्भ सामग्री

1. हिन्दी पत्रकारिता; कृष्णबिहारी मिश्र; भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 1969।
2. विकास पत्रकारिता; राधेश्याम शर्मा; हरियाणा साहित्य अकादमी; चण्डीगढ़, 1990।
3. हिन्दी पत्रकारिता: प्रेमचन्द और हंस; रत्नाकर पाण्डेय; प्रवीण प्रकाशन; दिल्ली, 1989।
4. विधि पत्रकारिता : चिन्ता और चुनौती; पवन चौधरी; विधि सेवा; दिल्ली, 1993।
5. समाचार पत्र : मुद्रण और साज-सज्जा; श्यामसुन्दर शर्मा; मध्यप्रदेश ग्रन्थ

अकादमी; भोपाल, 1978।

6. नई पत्रकारिता और समाचार लेखन; सविता चड्ढा; तक्षशिला प्रकाशन; दिल्ली, 1992।
7. समाचार फीचर-लेखन एवं सम्पादन कला; हरिमोहन; तक्षशिला प्रकाशन; दिल्ली, 1992।
8. हिन्दी पत्रकारिता इतिहास एवं स्वरूप; शिवकुमार दुबे; परिमल प्रकाशन; इलाहाबाद, 1993।
9. आधुनिक पत्रकारिता; अर्जुन तिवारी; विश्वविद्यालय प्रकाशन; वाराणसी, 1988।
10. सम्पादन के सिद्धान्त; रामचन्द्र तिवारी; आलेखन प्रकाशन; दिल्ली, 1987।

प्रश्न पत्र-5 (VI) अनुवाद-विज्ञान

पूर्णांक : 100
समय : 3 घण्टे

निर्देशः 1. पाठ्यक्रम तीन खण्डों में विभक्त है। प्रत्येक खण्ड में से दो प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किसी एक प्रश्न का उत्तर देना होगा। इनके लिए ~~60~~ 39 (3 × 20) अंक निर्धारित हैं।

2. समूचे पाठ्यक्रम पर आधारित दस लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 250 शब्दों में देना होगा। इसके लिए 20 (5 × 4) अंक निर्धारित हैं।

3. समूचे पाठ्यक्रम पर ही आधारित दस वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगे। जिनके लिए 10 (1 × 10) अंक निर्धारित हैं। इस प्रश्न में कोई विकल्प नहीं होगा।

4. प्रश्न-पत्र में अंग्रेजी का एक पाठांश दिया जाएगा, जिसका हिन्दी में अनुवाद करना होगा। इसके लिए ~~10~~ 11 अंक निर्धारित हैं।

पाठ्य विषय

खण्ड (क) अनुवाद : परिभाषा क्षेत्र एवं सीमाएँ :

अनुवाद का स्वरूप : अनुवाद कला, विज्ञान अथवा शिल्प;

अनुवाद की इकाई : शब्द, पदबंध, वाक्य, पाठ;

अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि : विश्लेषण, अंतरण, पुनर्गठन; अनुवाद-प्रक्रिया के विभिन्न चरण : स्रोतभाषा के पाठ का विश्लेषण एवं उसके अर्थग्रहण की प्रक्रिया, स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की तुलना तथा अर्थांतरण की प्रक्रिया; अनूदित पाठ का पुनर्गठन और अर्थ-संप्रेषण की प्रक्रिया; अनुवाद प्रक्रिया की प्रकृति; अनुवाद तथा समतुल्यता का सिद्धान्त।

खण्ड (ख) अनुवाद के क्षेत्र एवं प्रकार

कार्यालयी, वैज्ञानिक एवं तकनीकी, साहित्यिक, मानविकी, संचार-माध्यम, विज्ञापन आदि; अनुवाद की समस्याएँ : सृजनात्मक/साहित्यिक; कार्यालयी अनुवाद की समस्याएँ; वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ; विज्ञापन के अनुवाद की समस्याएँ; अनुवाद के उपकरणः कोश, पारिभाषिक शब्दावली, थिसारस, कम्प्यूटर आदि; अनुवाद : पुनरीक्षण, संपादन, मूल्यांकन; मशीनी अनुवाद; अनुवाद की सार्थकता; प्रासंगिकता एवं व्यावसायिक परिदृश्य; अनुवाद के गुण।

खण्ड (ग) पाठ की अवधारणा और प्रकृति

पाठ : शब्द, प्रति शब्द; शाब्दिक अनुवाद; भावानुवाद; छायानुवाद; पूर्ण और आंशिक अनुवाद; आशु अनुवाद; व्यावहारिक अनुवाद (प्रश्न-पत्र में दिए गए अंग्रेजी अवतरण का हिन्दी अनुवाद)।

संदर्भ-सामग्री

1. राजमल बोरा; अनुवाद क्या है; वाणी, नयी दिल्ली।
2. मधु धवन; भाषान्तरण कला; वाणी, नयी दिल्ली।
3. कैलाशचन्द्र भाटिया; भारतीय भाषाएँ और हिन्दी अनुवाद : समस्या समाधान; वाणी, नयी दिल्ली।
4. आरसु; साहित्यनुवादः संवाद और संवेदना; वाणी, नयी दिल्ली।
5. सुरेश कुमार; अनुवाद सिद्धान्त की रूपरेखा; वाणी, नयी दिल्ली।

प्रश्न पत्र-5 (VII) हरियाणी भाषा और साहित्य

पूर्णांक : 100

समय : 3 घण्टे

निर्देशः 1. समूचा पाठ्यक्रम चार खण्डों में विभक्त है—

(क) सन्दर्भ सहित व्याख्या, (ख) आलोचनात्मक प्रश्न,

(ग) लघूत्तरी प्रश्न, (घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न।

2. खण्ड (क) सन्दर्भ सहित व्याख्या से सम्बन्धित है। व्याख्यार्थ निर्धारित पुस्तक (हरियाणा के लोकगीत) में से छह अवतरण दिए जाएंगे, जिनमें से किन्हीं तीन अवतरणों की व्याख्या करनी होगी। यह खण्ड 30 (3 × 10) अंकों का होगा।

3. खण्ड (ख) आलोचनात्मक प्रश्नों से सम्बन्धित है। आलोचनात्मक प्रश्नों के लिए निर्धारित विषयों में से छह प्रश्न पुछे जाएंगे, जिनमें से तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। यह खण्ड 45 (3 × 15) अंकों का होगा।

4. खण्ड (ग) लघूत्तरी प्रश्नों से सम्बन्धित है। निर्धारित प्रश्नावली में से दस

प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर लगभग 250 शब्दों का होगा। इस खण्ड के लिए 15 (5 × 3) अंक निर्धारित हैं।

5. खण्ड (घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से सम्बन्धित है। पाठ्यक्रम में निर्धारित विशिष्ट रचनाकारों और विशिष्ट रचनाओं पर दस वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगे। इस प्रश्न में कोई विकल्प नहीं होगा। यह खण्ड 10 (1 × 10) अंकों का होगा।

व्याख्या हेतु निर्धारित पाठ्य ग्रन्थ

हरियाणा के लोकगीत; साधूराम शारदा (सं०); हरियाणा साहित्य एकादमी, पंचकूला।

आलोचनात्मक एवं लघूत्तरी प्रश्नों के लिए निर्धारित विषय

(क) हरियाणी : भाषा, संस्कृति और साहित्य

जनपदीय बोली : अवधारणा और स्वरूप।
जनपदीय साहित्य और शिष्ट साहित्य;
हरियाणा : भाषायी और सांस्कृतिक इकाई;
हरियाणा : महत्त्व और क्षेत्र-विस्तार;
हरियाणा की विशेषताएँ;
हरियाणा की उपबोलियाँ;
हरियाणा का पंजाबी, राजस्थानी और ब्रज से पार्थक्य;
हरियाणा : उद्भव और विकास।
हरियाणी लोक संस्कृति;
लोकनृत्य;
लोकवाद्य एवं संगीत;

(ख) लोककलाएँ

दिनचर्या और खानपान;
वेशभूषा;
रीति-रिवाज तथा संस्कार;
पर्व, मेले और त्योहार;
खेलकूद;
लोकविश्वास;
लोकमानस;।

(ग) हरियाणी लोक-साहित्य

लोकगीत;
लोक नाट्य;
लोककथा;

लोकगाथा;

लोक सुभाषित;

दृश्य एवं श्रव्य सामग्री (फिल्म, टी॰ वी॰, रेडियो)।

2. विशिष्ट रचनाकार

1. अहमदबख्श थानेसरी;
2. पंडित नेतराम;
3. दीपचंद;
4. हरदेवा स्वामी;
5. बाजे नाई (भगत);
6. पंडित लख्मीचन्द;
7. पंडित मांगेराम;
8. धनपत;
9. रामकिशन व्यास;
10. पंडित तुलेराम।

3. विशिष्ट रचनाएँ

1. गूगापीर (लोकगाथा);
2. निहालदे (लोकगाथा);
3. किस्सा रावकिशन गोपाल (लोकगाथा);
4. सत्यवान–सावित्री (पंडित लक्ष्मीचंद कृत लोकनाट्य);
5. कृष्ण–सुदामा (पंडित मांगेराम कृत लोकनाट्य);
6. भजनोपदेश माला (पंडित साधूराम);
7. श्री सतगुरु ब्रह्मानन्द पचासा (ब्रह्मानन्द सरस्वती);
8. हरियाणवी लोककथाएँ (सम्पादक, शंकरलाल यादव);
9. झाड़ू फिरी (राजाराम शास्त्री कृत उपन्यास);
10. विघ्न की जड़ (रामफल सिंह चहल कृत एकांकी)।

सन्दर्भ सामग्री

1. मानक हिन्दी और बाँगरू का व्यतिरेकी विश्लेषण, सोमदत्त बंसल; हरियाणा साहित्य अकादमी; चण्डीगढ़, 1983।
2. "संभावना" (लोक साहित्य विशेषांक); हिन्दी विभाग; कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, 1993।
3. संत शिरोमणि ब्रह्मानन्द सरस्वती; बाबूराम; साहित्य संस्थान; गाजियाबाद, 2002।
4. सांग सम्राट पंडित लख्मीचन्द; राजेन्द्र स्वरूप वत्स; हरियाणा साहित्य अकादमी; चण्डीगढ़, 1991।

5. हरियाणवी भाषा का उद्गम तथा विकास; नानकचन्द शर्मा; विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान; होशियारपुर, 1968।
6. हरियाणा (सांस्कृतिक दिग्दर्शन); संकलनकर्ता; पुष्पा जैन एवं सत्य पालगुप्त; हरियाणा लोक-सम्पर्क प्रकाशन; चण्डीगढ़, 1978।
7. हरियाणा : एक सांस्कृतिक अध्ययन; (सम्पा॰) साधूराम शारदा; भाषा विभाग; हरियाणा; 1978।
8. हरियाणा का लोक साहित्य; राजाराम शास्त्री; लोक सम्पर्क विभाग; हरियाणा; चण्डीगढ़, 1984।
9. हरियाणा लोक साहित्य : सांस्कृतिक सन्दर्भ; भीमसिंह मलिक; हरियाणा साहित्य अकादमी; चण्डीगढ़, 1990।
10. हरियाणा को लोक साहित्य; लालचन्द गुप्त "मंगल" सूर्यभारती प्रकाशन; दिल्ली, 1998।
11. हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य; शंकरलाल यादव; हिन्दुस्तानी एकेडमी; इलाहाबाद, 1960।
12. हरियाणा की लोकधर्मी नाट्य परम्परा; पूर्णचन्द शर्मा; हरियाणा साहित्य अकादमी; चण्डीगढ़, 1983।
13. हरियाणा लोकनाट्य परम्परा एवं कवि शिरोमणि पंडित मांगेराम; रघुबीर सिंह मथाना; लक्ष्मण साहित्य प्रकाशन; रोहतक, 1993।
14. हरियाणवी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन; गुणपाल सांगवान; हरियाणा साहित्य अकादमी; चण्डीगढ़, 1989।

July 2011
All rights reserved by
Directorate of Distance Education,
Kurukshetra University, Kurukshetra 136 119

University Centre for Distance Learning

Syllabi & Scheme of Examination
MA Hindi (Final)
2014-2015

Chaudhary Devi Lal University
Sirsa (Haryana)

Website: www.cdlu.ac.in

SCHEME OF EXAMINATION
MA HINDI (F)

(DISTANCE EDUCATION MODE)

Paper Code	Course Nomenclature	Maximum Marks	Minimum Marks	Assignment	Time
	(1) प्राचीन एवं मध्य कालीन काव्य	80	28	20	3 Hrs.
	(2) काव्यशास्त्र एवं साहित्य लोचन	80	28	20	3 Hrs.
	(3) प्रयोजनमुलक हिन्दी	80	28	20	3 Hrs.
	(4) भारतीय साहित्य	80	28	20	3 Hrs.
	(5) वैकल्पिक पेपर:	80	28	20	3 Hrs.
	सूरदास				
	हरियाणा का हिन्दी-साहित्य				

CHAUDHARY DEVI LAL UNIVERSITY, SIRSA

(Established by State Legislature Act 9 of 2003)

UNIVERSITY CENTRE FOR DISTANCE LEARNING

एम॰ ए॰ हिन्दी (अंतिम वर्ष)

Syllabus

SESSION 2011-12

प्रश्न पत्र : 6 प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

पूर्णांक : ~~100~~ 80

समय : 3 घण्टे

निर्देशः 1. समूचा पाठ्यक्रम चार खण्डों में विभक्त है—(क) संदर्भ सहित व्याख्या, (ख) आलोचनात्मक प्रश्न, (ग) लघूत्तरी प्रश्न, (घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न।

2. खण्ड—क संदर्भ सहित व्याख्या से सम्बन्धित है। व्याख्यार्थ तीन कवियों (विद्यापति, जायसी, घनानन्द) की निर्धारित कविताओं में से दो-दो अवतरण दिए जाएंगे, जिनमें से एक-एक अंश की व्याख्या करनी होगी। यह खण्ड 21 ~~30~~ (3 × ~~10~~)7 अंकों का होगा।

3. खण्ड—ख आलोचनात्मक प्रश्नों से सम्बन्धित है। आलोचनात्मक प्रश्नों के लिए निर्धारित कवियों (कबीर, सूरदास, तुलसीदास) और उनकी रचनाओं पर दो-दो आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा। यह खण्ड 36 ~~45~~ (3 × 12 ~~15~~) अंकों का होगा।

4. खण्ड—ग लघूत्तरी प्रश्नों से सम्बन्धित है। यहां दस कवियों (सरहपाद, गोरखनाथ, अमीर खुसरों, नन्ददास, मीराबाई, रैदास, रहीम, केशव, भूषण, गुरुगोबिन्द सिंह) तथा उनकी कृतियों का द्रुत-पाठ अपेक्षित है। प्रश्न-पत्र में प्रत्येक कवि से सम्बन्धित एक-एक प्रश्न पूछा जाएगा, जिनमें से किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर लगभग 250 शब्दों का होगा। इस खण्ड के लिए 15 (5 × 3) अंक निर्धारित हैं।

5. खण्ड—घ वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से सम्बन्धित है। यहां खण्ड-क और ख में नियत छहों कवियों और उनकी रचनाओं पर आधारित दस वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगे। इस प्रश्न में कोई विकल्प नहीं होगा। यह खण्ड ~~10~~ 08 (1 × ~~10~~)8 अंकों का होगा।

व्याख्या हेतु निर्धारित पाठ्य—ग्रन्थ :

1. विद्यापति पदावली, (सं॰) रामवृक्ष बेनीपुरी; (वन्दना, नखशिख, प्रेम प्रसंग, वसन्त विरह = कुल पांच खण्ड)।
2. जायसी ग्रंथावली, (सं॰) रामचन्द्र शुक्ल; (नखशिख खण्ड, नागमती वियोग खण्ड,

नागमती संदेश खण्ड = कुल तीन खण्ड)।

3. घनानंद कवित्त; (सं॰) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र।

आलोचनात्मक एवं लघूत्तरी प्रश्नों के लिए निर्धारित विषय :

1. **कबीर :** व्यक्तित्व और युग; भक्ति भावना, निर्गुण का स्वरूप, रहस्य—साधना, विद्रोह और समाज-दर्शन; भाषा; कवि के रूप में कबीर; निर्गुण काव्यधारा में कबीर का स्थान, कबीर और तुलसी के राम में अन्तर; .... ना हिन्दू, ना मुसलमान।

2. **सूरदास :** व्यक्तित्व और युग; दार्शनिक चेतना; भक्ति भावना; शृंगार-वर्णन; वात्सल्य वर्णन; कृष्ण और राधा का शील—निरूपण; सौंदर्य बोध; प्रकृति-चित्रण; गीतात्मकता; भाषा; भ्रमरगीत-परम्परा में सूर के "भ्रमरगीत" का स्थान; भ्रमरगीत में वाग्वैदग्ध्य; कृष्ण-काव्यधारा में सूर का स्थान।

3. **तुलसीदास :** व्यक्तित्व और युग; दार्शनिक चेतना; भक्तिभावना; लोकमंगल की भावना; रामराज्य की कल्पना; यथार्थबोध; रामचरितमानस, भरत चरित्र; चित्रकूट का महत्त्व; प्रबन्ध-कल्पना; कवितावली का काव्य सौष्ठव; रामकाव्यधारा में तुलसीदास का स्थान।

संदर्भ-सामग्री :

1. विश्वनाथप्रसाद मिश्र; विद्यापति; नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स; वाराणसी, 1979।
2. शिवप्रसाद सिंह; विद्यापति; हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, 1961।
3. राजदेवसिंह; हिन्दी की निर्गुणकाव्यधारा और कबीर; आलेख प्रकाशन; दिल्ली, 1980।
4. सरनाम सिंह शर्मा; कबीर : व्यक्तित्व, कृतित्व और सिद्धान्त; भारतीय शोध संस्थान, जयपुर, 1969।
5. यश गुलाटी; सूफी कविता की पहचान; प्रवीण प्रकाशन; दिल्ली; 1979।
6. राजदेवसिंह; पद्मावत : नवमूल्यांकन; पाण्डुलिपि प्रकाशन; दिल्ली; 1975।
7. भीमसिंह मलिक; जायसी काव्य का सांस्कृतिक अध्ययन; कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र 1977।
8. रामचन्द्र शुक्ल : सूरदास; नागरी प्रचारिणी सभा; काशी, 1973।
9. 'संभावना; (सूर विशेषांक), हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र।
10. हरवंशलाल शर्मा; सूर और उनका साहित्य; भारत प्रकाशन मन्दिर; अलीगढ़, 1964।
11. भाग्यवती सिंह; तुलसी की काव्यकला; सरस्वती पुस्तक सदन; आगरा, 1962।
12. हरिश्चन्द्र वर्मा; तुलसी साहित्य में नीति, भक्ति और दर्शन; संजीव प्रकाशन, कुरुक्षेत्र, 1983।
13. संभावना; (तुलसी विशेषांक), हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, 1975।

14. कृष्णचन्द्र वर्मा; रीति स्वच्छन्द काव्यधारा; कैलाश पुस्तक सदन, ग्वालियर, 1967।

15. लल्लनराय; घनानन्द, साहित्य अकादमी, दिल्ली, 1983।

प्रश्न पत्र : 7 काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन

पूर्णांक : ~~100~~ 80

समय : 3 घण्टे

निर्देशः 1. पाठ्यक्रम चार खण्डों में विभक्त है — खण्ड-क संस्कृत काव्यशास्त्र, खण्ड-ख पाश्चात्य काव्यशास्त्र, खण्ड-ग हिन्दी काव्यशास्त्र और समीक्षा-पद्धतियों तथा खण्ड-घ व्यावहारिक समीक्षा से सम्बन्धित है। पहले तीन खण्डों से दो-दो प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा। इसके लिए ~~60~~ (3 × ~~20~~)/13 अंक निर्धारित हैं।

2. खण्ड-घ के अंतर्गत कोई एक काव्यांश दिया जाएगा, जिसकी व्यावहारिक समीक्षा लिखनी होगी। इस खण्ड के लिए ~~10~~ 11 अंक निर्धारित हैं।

3. प्रश्न-पत्र में समूचे पाठ्यक्रम पर ही आधारित दस लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 250 शब्दों का होगा। इसके लिए 20 (5 × 4) अंक निर्धारित हैं।

4. समूचे पाठ्यक्रम पर ही आधारित दस वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगे। इस प्रश्न में कोई विकल्प नहीं होगा। इस अंश के लिए ~~10~~ 08 (1 × ~~10~~ 08) अंक निर्धारित हैं।

पाठ्य विषय :

खण्ड-क संस्कृत काव्यशास्त्र

काव्य लक्षण : काव्य हेतु; काव्य-प्रयोजन; काव्य-प्रकार।

रस सिद्धांत : रस का स्वरूप, रस निष्पत्ति, रस के अंग (अवयव); साधारणीकरण, सहृदय की अवधारणा।

अलंकार सिद्धान्त : मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण।

रीति सिद्धान्त : रीति की अवधारणा, काव्य-गुण, रीति एवं शैली, रीति सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ।

वक्रोक्ति सिद्धान्त : वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद।

ध्वनि सिद्धान्त : ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ, ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद, गुणीभूत व्यंग्य, चित्रकाव्य।

औचित्य सिद्धान्त : प्रमुख स्थापनाएँ, औचित्य के भेद।

खण्ड-ख पाश्चात्य काव्यशास्त्र

प्लेटो : काव्य सिद्धान्त;

अरस्तू : अनुकरण-सिद्धान्त, त्रासदी-विरचन;

लोन्जाइनस : उदात्त की अवधारणा;

ड्राइड्न : काव्य-सिद्धान्त;

वर्ड्सवर्थ : काव्य-भाषा का सिद्धान्त;

कॉलरिज : कल्पना सिद्धान्त और ललित कल्पना;

मैथ्यू आर्नल्ड : आलोचना का स्वरूप और प्रकार्य;

टी॰ एस॰ इलियट : परम्परा की परिकल्पना और वैयक्तिक प्रज्ञा; निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त; वस्तुनिष्ठ समीकरण; संवेदनशीलता का असाहचर्य;

आई॰ए॰रिचड्र्स : रागात्मक अर्थ; संवेगों का संतुलन; व्यावहारिक आलोचना;

सिद्धान्त और वाद : आभिजात्यवाद, स्वच्छंदतावाद, अभिव्यंजनावाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषण, अस्तित्ववाद।

आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ : संरचनावाद, शैलीविज्ञान, विखंडन सिद्धान्त, उत्तर आधुनिकतावाद।

खण्ड-ग हिन्दी काव्यशास्त्र एवं समीक्षा-पद्धतियाँ

लक्षण काव्य परम्परा एवं कवि शिक्षा : (केशवदास, चिन्तामणि, भिखारीदास, कुलपति, देव, पद्माकर, मतिराम के संदर्भ में)।

आलोचनात्मक पद्धतियाँ : शास्त्रीय, व्यक्तिवादी, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, प्रभाववादी, मनोविश्लेषणवादी, सौन्दर्यशास्त्रीय, शैलीवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय।

खण्ड-घ व्यावहारिक समीक्षा

प्रश्न पत्र में पूछे गए किसी काव्यांश की स्वविवेक के अनुसार समीक्षा।

सन्दर्भ सामग्री :

1. साहित्यालोचन; श्यामसुन्दर दास; इण्डियन प्रेस; प्रयाग; 1942।
2. काव्य के रूप; गुलाबराय; प्रतिभा प्रकाशन मन्दिर; दिल्ली; 1947।
3. काव्यशास्त्र; भगीरथ मिश्र; विश्वविद्यालय प्रकाशन; वाराणसी; 1974।
4. सिद्धान्त और अध्ययन; गुलाबराय; आत्माराम एण्ड सन्स; दिल्ली; 1980।
5. भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका; नगेन्द्र; नेशनल पब्लिशिंग हाऊस; दिल्ली; 1953।
6. शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त (दो भाग); गोविन्द त्रिगुणायत; भारती साहित्य मन्दिर; दिल्ली, 1970।
7. भारतीय काव्यशास्त्र; कृष्णबल; राधाकृष्णन प्रकाशन; दिल्ली; 1959।

8. भारतीय काव्यशास्त्र; सत्यदेव चौधरी; अलंकार प्रकाशन; दिल्ली; 1974।
9. भारतीय काव्य सिद्धान्त; काका कालेलकर; लोकभारती प्रकाशन; इलाहाबाद; 1969।
10. भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र; सत्यदेव चौधरी एवं शान्तिस्वरूप गुप्त; अशोक प्रकाशन; दिल्ली; 1978।
11. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य-सिद्धान्त; गणपतिचन्द्र गुप्त; लोकभारती प्रकाशन; इलाहाबाद; 1990।
12. समीक्षा शास्त्र; दशरथ ओझा; राजपाल एण्ड सन्स; दिल्ली, 1972।
13. पाश्चात्य साहित्यालोचन के सिद्धान्त; लीलाधर गुप्त; हिन्दुस्तानी एकेडमी; इलाहाबाद; 1952।
14. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त; मैथिलीप्रसाद भारद्वाज; हरियाणा साहित्य अकादमी; चण्डीगढ़; 1988।
15. पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परम्परा; नगेन्द्र एवं सावित्री सिन्हा; दिल्ली विश्वविद्यालय; दिल्ली, 1972।
16. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : सिद्धान्त और वाद; नगेन्द्र, दिल्ली विश्वविद्यालय; दिल्ली; 1967।
17. हिन्दी आलोचना : उद्भव और विकास; भगवत्स्वरूप मिश्र; साहित्य-सदन; देहरादून; 1972।
18. हिन्दी आलोचना : अतीत और वर्तमान; प्रभाकर माचवे; हिन्दुस्तानी एकेडमी; इलाहाबाद, 1988।
19. मार्क्सवादी, समाजशास्त्रीय और ऐतिहासिक आलोचना; पाण्डेय शशिभूषण "शीतांशु"; राधाकृष्ण प्रकाशन; दिल्ली; 1992।
20. नई समीक्षा : महेन्द्र चतुर्वेदी एवं राजकुमार कोहली; विश्वविद्यालय ग्रन्थ निर्माण निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय; दिल्ली; 1980।

प्रश्न पत्र : 8 प्रयोजनमूलक हिन्दी

पूर्णांक : ~~100~~ 80

समय : 3 घण्टे

निर्देश: 1. पाठ्यक्रम चार खण्डों में विभक्त है। प्रत्येक खण्ड से दो-दो आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किसी एक का उत्तर देना होगा। इनके लिए ~~60~~ 40 (4 × 10) अंक निर्धारित हैं।

2. समूचे पाठ्यक्रम पर आधारित दस लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 250

शब्दों का होगा। इनके लिए 20 (5 × 4) अंक नियत हैं।

3. समूचे पाठ्यक्रम पर आधारित बीस वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनके लिए 20 (1 × 20) अंक निर्धारित हैं। इस प्रश्न में कोई विकल्प नहीं होगा।

पाठ्य विषय :

खण्ड–क कामकाजी हिन्दी और हिन्दी कम्प्यूटिंग

हिन्दी के विभिन्न रूप — सर्जनात्मक भाषा, संचार भाषा, राजभाषा, माध्यम–भाषा, मातृभाषा, कार्यालयी हिन्दी (राजभाषा) के प्रमुख प्रकार्य : प्रारूपण, पत्र लेखन, संक्षेपण, पल्लवन, टिप्पण; पारिभाषिक शब्दावली : स्वरूप एवं महत्त्व; निर्माण के सिद्धान्त;

ज्ञान विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली;

कम्प्यूटर : परिचय, रूपरेखा, उपयोग तथा क्षेत्र; वेब पब्लिशिंग का परिचय, इंटरनेट संपर्क उपकरणों का परिचय; प्रकार्यात्मक रख-रखाव एवं इंटरनेट समय मितव्ययिता के सूत्र; इंटर एक्सप्लोइट अथवा नेटस्केप लिंक; ब्राउजिंग; ई-मेल प्रेषण/ग्रहण; हिन्दी के प्रमुख इंटरनेट पोर्टल; डाउनलोडिंग व अपलोडिंग; हिन्दी सॉफ्टवेयर पैकेज।

खण्ड—ख पत्रकारिता

पत्रकारिता : स्वरूप एवं प्रकार;

समाचार लेखन कला;

संपादन के आधारभूत तत्त्व;

व्यावहारिक प्रूफ शोधन;

शीर्षक की संरचना, लीड, इंट्रो एवं शीर्षक–संपादन;

संपादकीय लेखन;

पृष्ठ–सज्जा;

साक्षात्कार, पत्रकार–वार्ता व प्रेस–प्रबंधन;

प्रमुख प्रेस–कानून एवं आचार–संहिता;

खण्ड–ग मीडिया लेखन :

जनसंचार, प्रौद्योगिकी एवं चुनौतियाँ;

विभिन्न जनसंचार माध्यमों का स्वरूप : मुद्रण, श्रव्य, दृश्य-श्रव्य, इंटरनेट;

श्रव्य माध्यम (रेडियो) : मौखिक भाषा की प्रकृति; समाचार लेखन एवं वाचन; रेडियो नाटक; उद्घोषणा लेखन; विज्ञापन लेखन; फीचर तथा रिपोर्ताज;

दृश्य — श्रव्य माध्यम (फिल्म, टेलिविजन एवं वीडियो) : दृश्य माध्यमों में भाषा की प्रकृति; दृश्य एवं श्रव्य सामग्री का सामंजस्य; पार्श्व वाचन (वायस ओवर); पटकथा लेखन;

टेली-ड्रामा/डॉक्यू ड्रामा; संवाद लेखन; साहित्य की विधाओं का दृश्य-माध्यमों में रूपांतरण; विज्ञापन की भाषा।

खण्ड-घ अनुवाद : सिद्धान्त एवं व्यवहार

अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र, प्रक्रिया एवं प्रविधि;

हिन्दी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका;

कार्यालयी हिन्दी और अनुवाद;

जनसंचार माध्यमों का अनुवाद;

विज्ञापन में अनुवाद;

वैचारिक साहित्य का अनुवाद;

वाणिज्यिक अनुवाद;

वैज्ञानिक, तकनीकी तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में अनुवाद;

विधि साहित्य की हिन्दी और अनुवाद;

व्यावहारिक-अनुवाद-अभ्यास;

कार्यालयी अनुवाद : कार्यालयी एवं प्रशासनिक शब्दावली, प्रशासनिक प्रयुक्तियाँ, पदनाम, विभाग आदि; पत्रों, पदनामों, अनुभागों, दस्तावेजों के अनुवाद।

संदर्भ-सामग्री :

1. विनोदकुमार प्रसाद; भाषा और प्रौद्योगिकी; वाणी, नयी दिल्ली।
2. प्रेमचंद पातंजलि; व्यावसायिक हिन्दी; वाणी, नयी दिल्ली।
3. प्रेमचंद पातंजलि : आधुनिक विज्ञापन; नयी दिल्ली।
4. विनोद गोदरे; प्रयोजनमूलक हिन्दी; वाणी; नयी दिल्ली।
5. रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव; प्रयोजनमूलक हिन्दी; केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।
6. दंगल झाल्टे; प्रयोजनमूलक हिन्दी; सिद्धान्त और प्रयोग; वाणी, नयी दिल्ली।
7. शिवनारायण चतुर्वेदी; टिप्पणी प्रारूप; वाणी, नयी दिल्ली।
8. शिवनारायण; चतुर्वेदी; प्रालेखन प्रारूप; वाणी, नयी दिल्ली।
9. माणिक मृगेश; राजभाषा हिन्दी; वाणी, नयी दिल्ली।
10. कैलाशचन्द्र भाटिया, राजभाषा हिन्दी; वाणी, नयी दिल्ली।
11. महेशचन्द्र गुप्त; प्रशासनिक हिन्दी; ऐतिहासिक सन्दर्भ; वाणी, नयी दिल्ली।
12. रहमतुल्लाह; व्यावसायिक हिन्दी; वाणी, नयी दिल्ली।
13. भोलानाथ तिवारी एवं विजय कुलश्रेष्ठ; पत्र-व्यवहार निर्देशिका; वाणी, नयी दिल्ली।
14. भोलानाथ तिवारी; प्रारूपण; टिप्पण और प्रूफ-पठन; वाणी, नयी दिल्ली।

15. श्रीराम मुंढे; बीमा के तत्त्व; वाणी, नयी दिल्ली।
16. कृष्णकुमार गोस्वामी; व्यावहारिक हिन्दी और स्वरूप; वाणी, नयी दिल्ली।
17. बालेन्दुशेखर तिवारी (सं॰); प्रयोजनमूलक हिन्दी; संजय बुक सैन्टर, वाराणसी।

प्रश्न पत्र : 9 भारतीय साहित्य

पूर्णांक : ~~100~~ 80
समय : 3 घण्टे

निर्देश: 1. समूचा पाठ्यक्रम चार खण्डों में विभक्त है।
(क) सन्दर्भ सहित व्याख्या; (ख) आलोचनात्मक प्रश्न;
(ग) लघूत्तरी प्रश्न, (घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न।

2. खण्ड–क सन्दर्भ सहित व्याख्या से सम्बन्धित है। व्याख्यार्थ निर्धारित तीन पुस्तकों (अग्निगर्भ, वर्षा की सुबह, घासीराम कोतवाल) में से दो–दो अवतरण दिए जाएंगे, जिनमें से एक–एक अवतरण की व्याख्या करनी होगी। यह खण्ड 21 ~~30~~ (3 × ~~10~~ 7) अंकों का होगा।

3. खण्ड–ख आलोचनात्मक प्रश्नों से सम्बन्धित है। निर्धारित विषयों में से प्रत्येक उपखंड में से दो–दो (कुल छह) प्रश्न दिए जाएंगे, जिनमें से एक–एक प्रश्न का उत्तर देना होगा। यह खण्ड 36 ~~45~~ (3 × 12 ~~15~~) अंकों का होगा।

4. खण्ड (ग) लघूत्तरी प्रश्नों से सम्बन्धित है। पाठ्यक्रम में निर्धारित विषयों में से ही दस प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर लगभग 250 शब्दों का होगा। इस खण्ड के लिए 15 (5 × 3) अंक निर्धारित हैं।

5. खण्ड (घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से सम्बन्धित है। यहां व्याख्यार्थ निर्धारित उपर्युक्त तीनों पाठ्य–पुस्तकों पर आधारित दस वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगे। इस प्रश्न में कोई विकल्प नहीं होगा। यह खण्ड ~~10~~ 08 (1 × ~~10~~ 08) अंकों का होगा।

व्याख्या हेतु निर्धारित पाठ्य ग्रन्थ :

1. अग्निगर्भ (बंगला उपन्यास); महाश्वेतादेवी।
2. वर्षा की सुबह (उड़िया कविता); सीताकान्त महापात्र।
3. घासीराम कोतवाल (मराठी नाटक); विजय तेन्दुलकर।

आलोचनात्मक एवं लघूत्तरी प्रश्नों के लिए निर्धारित विषय :

1. भारतीय साहित्य और भारतीयता
भारतीय साहित्य का स्वरूप; भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ; भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिम्ब; भारतीयता का समाजशास्त्र; हिन्दी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति।

2. बंगला साहित्य का इतिहास

चैतन्य पूर्व वैष्णव साहित्य (10–15वीं शती) : विद्यापति, मालान्धर बसु; मंगल काव्य : विजयगुप्त, नारायणदेव; चैतन्य वैष्णव युग (16वीं शती) : गौड़ीय-वैष्णव पदावली; चण्डीमंगल काव्य, चैतन्य जीवनी : चैतन्योत्तर युग (17वीं शती) : मंसामंगल, चण्डीमंगल, दुर्गामंगल काव्य; इस्लामी काव्य; नाथ साहित्य : आधुनिक युग (18वीं शती), बंगला गद्य [उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध का उदय और विकास], फोर्ट विलियम कॉलेज, राजाराम मोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय, रमेशचन्द्र दत्त, तारकनाथ गंगोपध्याय, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, आधुनिक कविता।

3. बंगला और हिन्दी साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन

बंगला वैष्णव काव्य परम्परा और हिन्दी भक्तिकाल; बंगला-हिन्दी नाथ साहित्य; बंगला मुस्लिम साहित्य और हिन्दी सूफी काव्य; बंकिमचन्द्र और भारतेन्दु : नजरुल इसलाम और निराला; आधुनिक बंगला-हिन्दी गद्य साहित्य (उपन्यास, कहानी)

सन्दर्भ-सामग्री :

1. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय; फोर्ट विलियम कॉलेज; इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, 1948।
2. सुकुमार सेन; बंगला साहित्य की कथा; हिन्दी साहित्य; हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 2009 (वि०)।
3. हजारी प्रसाद द्विवेदी; मध्यकालीन धर्मसाधना; साहित्य भवन; इलाहाबाद, 2013 (सं०)।
4. परशुराम चतुर्वेदी; मध्यकालीन प्रेम साधना; आत्माराम एंड सन्स, दिल्ली, 1952।
5. सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला"; रवीन्द्र कविता कानन; राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1955।
6. नगेन्द्र नाथ गुप्त; विद्यापति ठाकुर की पदावली; इण्डियन प्रैस, प्रयाग, 1910।
7. सुकुमार सेन; बंगला साहित्य का इतिहास; साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली, 1970।

प्रश्न-पत्र 10 (iii) सूरदास

पूर्णांक : ~~100~~ 80

समय : 3 घण्टे

निर्देशः 1. समूचा पाठ्यक्रम चार खण्डों में विभक्त है--(क) संदर्भ सहित व्याख्या, (ख) आलोचनात्मक प्रश्न (ग) लघूत्तरी प्रश्न (घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न।

2. खण्ड-क सन्दर्भ सहित व्याख्या से सम्बन्धित है। व्याख्यार्थ निर्धारित पुस्तक (सूरसागर-सार) में से छह अवतरण दिए जाएंगे, जिनमें से तीन अवतरणों की व्याख्या करनी होगी। यह खण्ड ~~30~~ (3 × ~~10~~) अंकों का होगा।

21 07

3. खण्ड (ख) आलोचनात्मक प्रश्नों से सम्बन्धित है। निर्धारित कवि सूरदास और उनकी कृतियों पर छह आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होगें। यह खण्ड 45 (3 × 15) अंकों का होगा।

4. खण्ड-ग लघूत्तरी प्रश्नों से सम्बन्धित है। पाठ्यक्रम में निर्धारित कवि और उसकी कृतियों पर आधारित दस प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से पांच प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर लगभग 250 शब्दों का होगा। इस खण्ड के लिए 15 (5 × 3) अंक निर्धारित हैं।

5. खण्ड (घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से सम्बन्धित है। सूरदास और उनकी कृतियों पर आधारित दस वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगे। इस प्रश्न में कोई विकल्प नहीं होगा। यह खण्ड 10 (1 × 10) अंकों का होगा।

व्याख्या हेतु निर्धारित पाठ्य ग्रन्थ :

सूरसागर—सार; धीरेन्द्र वर्मा; साहित्य भवन प्रा॰ लि॰; इलाहाबाद

आलोचनात्मक एवं लघूत्तरी प्रश्नों के लिए निर्धारित विषय :

कृष्णभक्ति-काव्य : परम्परा और प्रवृत्तियां; सूरदास का प्रामाणिक जीवन-वृत्त; जन्मान्धता का प्रश्न, सूरसागर : प्रतिपाद्य और मौलिकता; साहित्यलहरी: प्रतिपाद्य और प्रामाणिकता; सूरसारावली : प्रतिपाद्य और मौलिकता; साहित्यलहरी : प्रतिपाद्य और प्रामाणिकता; सूर की भक्ति-भावना; दार्शनिक चेतना; सौंदर्य-दृष्टि, शृंगार-वर्णन; वात्सल्य वर्णन; प्रकृति-चित्रण; ब्रज-संस्कृति एवं लोकतत्त्व, भ्रमरगीत का उद्देश्य; भ्रमरगीत में वाग्वैदग्ध्य, कृष्ण, राधा, नन्द और यशोदा के शील-निरूपण; आधुनिक संदर्भों में सूरकाव्य की प्रासंगिकता, भ्रमरगीत-परम्परा में सूर-कृत भ्रमरगीत का स्थान; सूर का गीति-काव्य; संगीत-साधना; दृष्टिकूट-पदावली, भाषा; काव्य-रूप एवं छन्द-अलंकार-योजना; सूरकाव्य और कविता के आधुनिक प्रतिमान।

सन्दर्भ सामग्री :

1. सूर-साहित्य, हजारीप्रसाद द्विवेदी; हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर; बम्बई; 1956।
2. महाकवि सूरदास; नन्ददुलारे वाजपेयी; आत्माराम एण्ड सन्स; दिल्ली; 1952।
3. सूरदास; ब्रजेश्वर वर्मा; हिन्दी परिषद्; प्रयाग विश्वविद्यालय; 1950।
4. सूरदास; रामचन्द्र शुक्ल; सरस्वती मंदिर; बनारस; 1949।
5. सूरदास; हरवंशलाल शर्मा; राधाकृष्ण प्रकाशन; दिल्ली; 1972।
6. सूरकाव्य में लोक दृष्टि का विश्लेषण; मीरा गौतम; निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली 2000।
7. सूर-सौरभ, मुंशीराम शर्मा "सोम"; आचार्य शुक्ल साधना मन्दिर, कानपुर; 1945।
8. सूर की काव्य-कला; मनमोहन गौतम; भारती साहित्य मंदिर, दिल्ली; 1953।

9. "संभावना" (सूर-विशेषांक); हिन्दी-विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र; 1981।

प्रश्न पत्र-10 (vii) हरियाणा का हिन्दी-साहित्य

पूर्णांक : ~~100~~ 80
समय : 3 घण्टे

निर्देशः 1. समूचा पाठ्यक्रम चार खण्डों में विभक्त है—
(क) सन्दर्भ सहित व्याख्या, (ख) आलोचनात्मक प्रश्न,
(ग) लघूत्तरी प्रश्न, (घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न।

2. खण्ड-क सन्दर्भ सहित व्याख्या से सम्बन्धित है। व्याख्यार्थ निर्धारित पुस्तक (कविता यात्रा – छः) में से छह अवतरण दिए जाएंगे, जिनमें से किन्हीं तीन अवतरणों की व्याख्या करनी होगा। यह खण्ड ~~30~~ 24 (3 × ~~10~~ 08) अंकों का होगा।

3. खण्ड (ख) आलोचनात्मक प्रश्नों से सम्बन्धित है। आलोचनात्मक प्रश्नों के लिए निर्धारित विषयों में से छह प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। यह खण्ड ~~45~~ 36 (3 × ~~15~~ 12) अंकों का होगा।

4. खण्ड-ग लघूत्तरी प्रश्नों से सम्बन्धित है। निर्धारित प्रश्नावली में से दस प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक का उत्तर लगभग 250 शब्दों का होगा। इस खण्ड के लिए 15 (5 × 3) अंक निर्धारित हैं।

5. खण्ड-घ वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से सम्बन्धित है। इस खण्ड के लिए एक नयी पाठ्य पुस्तक (कहानी-यात्रा : सात) निर्धारित है। इस पाठ्य पुस्तक पर आधारित दस वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगे। इस प्रश्न में कोई विकल्प नहीं होगा। यह खण्ड ~~10~~ 08 (1 × ~~10~~ 08) अंकों का होगा।

व्याख्या हेतु निर्धारित पाठ्य ग्रन्थ :

हरियाणा प्रतिनिध कविता; हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़ (पंचकूला); 1992।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के लिए निर्धारित पाठ्य ग्रंथ :

हरियाणा प्रतिनिधि कहानियाँ; हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़ (पंचकूला); 1991।

आलोचनात्मक एवं लघूत्तरी प्रश्नों के लिए निर्धारित विषय :

हरियाणा : प्रागैतिहासिकता एवं नामकरण; साहित्य-सृजन की प्राचीन परम्परा;

जैन काव्य : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; नाथ-सिद्ध काव्य : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; संत काव्य : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; सूफी काव्य : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; रामकाव्य : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; कृष्ण काव्य : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; महाकाव्य : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ;

खण्डकाव्य : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; मुक्तकाव्य : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; नाट्यकाव्य : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; पत्रकारिता : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; निबन्ध : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; आलोचना : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; उपन्यास : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; कहानी : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; लघुकथा : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; बाल साहित्य : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; नाटक : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; एकांकी : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; गज़ल : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; नवगीत : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; हिन्दी साहित्य को हरियाणा का योगदान।

सन्दर्भ–सामग्री :

1. हरियाणा : एक सांस्कृतिक अध्ययन; साधुराम शारदा; भाषा विभाग हरियाणा, चण्डीगढ़ (पंचकूला); 1978।
2. हरियाणा में रचित हिन्दी साहित्य; सत्यपाल गुप्त; भाषा विभाग हरियाणा; चण्डीगढ़ (पंचकूला), 1969।
3. "सप्तसिन्धु" (हरियाणा साहित्य विशेषांक); भाषा विभाग हरियाणा, चण्डीगढ़ (पंचकूला), 1968।
4. हरियाणा का हिन्दी साहित्य : उदभ्व और विकास; शिवप्रसाद गोयल; नटराज पब्लिशिंग हाऊस, करनाल; 1984।
5. हिन्दी साहित्य को हरियाणा का योगदान; शशिभूषण सिंहल एवं सत्यपाल गुप्त; हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़ (पंचकूला), 1991।
6. हरियाणा में रचित सृजनात्मक हिन्दी साहित्य; रामनिवास "मानव"; कृति प्रकाशन, दिल्ली एवं हिसार; 1999।
7. "संभावना" (हरियाणा का हिन्दी साहित्य विशेषांक); लालचन्द गुप्त "मंगल"; हिन्दी विभाग; कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय; 2001।
8. हरियाणा की हिन्दी काव्य सम्पदा; शक्ति; सत्य–सुन्दर प्रकाशक, दिल्ली; 1977।
9. हरियाणा के हिन्दी प्रबन्ध काव्य; महासिंह पूनिया; निर्मल बुक ऐजन्सी, कुरुक्षेत्र; 1998।
10. हरियाणा में रचित हिन्दी महाकाव्य; रामनिवास "मानव"; अनिल प्रकाशन, दिल्ली; 2002।
11. हरियाणा की हिन्दी कहानी; उषा लाल; निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली; 1996।
12. हरियाणा में रचित हिन्दी नाटकों का सांस्कृतिक अध्ययन (अप्रकाशित शोध–प्रबन्ध); किरण बाला; हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय; 1996।
13. हिन्दी उपन्यास साहित्य को हरियाणा का योगदान (अप्रकाशित शोध–प्रबन्ध); सुखप्रीत; हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय; 1997।
14. हरियाणा का लघुकथा संसार; रूपदेवगुण एवं राजकुमार निजात, राज पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली; 1988।

July 2011
All rights reserved by
Directorate of Distance Education,
Kurukshetra University, Kurukshetra 136 119